"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"

JAYOTI VIDYAPEETH WOMEN'S UNIVERSITY, JAIPUR

FACULTY OF EDUCATION & METHODOLOGY

Faculty Name : JV'n Chanda kumawat

Program : Hindi lit.

Course Name : B.A B.Ed /B.Sc.B.Ed 2 sem

Session No. & Name : 2023 Augest

Academic Day starts with –

- Greeting with saying **'Namaste'** by joining Hands together following by 2-3 Minutes Happy session, Celebrating birthday of any student of respective class and **National Anthem**.

Lecture Starts with- Review of previous Session

National song' Vande Mataram'

सूर्यकांत त्रिपाटी निराला की कविता "जूही की कली"

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जन्म: 21 फरवरी 1896, मृत्यु: 15 अक्टूबर 1961ई. एक प्रसिद्ध कवि व लेखक थे। निराला एक छायावादी कवि थे। वे कविताओं के साथ-साथ निबंध, उपन्यास व कहानियाँ भी रचते थे। उनकी कविताएँ बहुत लोकप्रिय रही हैं। लेखन के अलावा वे स्केच भी

बनाते थे। ‘निराला’ उनका लेखन नाम रहा है जबकि उनका वास्तविक नाम सूर्यकान्त त्रिपाठी था।पश्चिम बंगाल में पैदा होने के कारण, निराला की मातृ भाषा बंगाली थी। जब सूर्यकान्त बहुत छोटे थे तब उनकी माता का देहांत हो गया था। माता के जाने के बाद, निराला का प्रारंभिक जीवन कठिनाइयों में बीता।

निराला का विवाह मनोहरी देवी के साथ हुआ। मनोहरी ने निराला को हिन्दी सीखने के लिए प्रेरित किया। 20 वर्ष की आयु में निराला ने हिन्दी सीखी। हिन्दी सीखने के बाद उन्होंने बंगाली के बजाय हिन्दी में ही कविताएँ लिखनी शुरु की। विवाह के बाद उनका जीवन बचपन की तुलना में ठीक चल रहापरंतु, निराला जब 22 वर्ष के थे तब उनकी पत्नी का भी देहांत हो गया। उनकी एक पुत्री भी थी। पुत्री के विवाह के बाद, वह भी विधवा हो गयी और कुछ समय बाद उसका भी देहांत हो गया। उन दोनों की मृत्यु का कारण 1918 के समय में चल रही फ्लू की बिमारी थी। पत्नी व पुत्री की मृत्यु के बाद, निराला का जीवन नीरस हो गया।

परंतु धीरे-धीरे उन्होंने लेखन में अपना मन लगाया। और बाद में, लेखन ही उनका परिवार बन गया। ऐसा कहा जाता है कि महादेवी वर्मा ने निराला को जीवनपर्यन्त 40 वर्षों तक राखी बांधी। वह महादेवी को अपनी मुँहबोली बहन मानते थे।

लेखन कार्य –

सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ के उपन्यास –

- अप्सरा, अलका ,इन्दुलेखा, काले कारनामे, चमेली ,चोटी की पकड़ ,निरुपमा, प्रभावती

- सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ की कहानियाँ –
- चतुरी चमार ,देवी, सुकुल की बीवी, सखी ,लिली

निबंध -

- चयन , चाबुक प्रबंध , पद्य प्रबंध, प्रतिमा प्रबंध परिचय, बंगभाषा का उच्चारण
- रवीन्द्र-कविता

निराला’ की कविताएँ –

अणिमा, अनामिका, अपरा, अर्चना, आराधना, कुकुरमुत्ता, गीतगुंजन, गीतिका, जन्मभूमि जागो फिर एक बार, तुलसीदास, तोड़ती पत्थर, ध्वनि नये पत्ते परिमल

जुही की कली कविता

विजन-वन-वल्लरी पर

सोती थी सुहाग-भरी—स्नेह-स्वप्न-मग्न—

अमल-कोमल-तनु तरुणी—जुही की कली,

दृग बन्द किये, शिथिल, —पत्रांक में,

वासन्ती निशा थी;

विरह-विधुर-प्रिया-संग छोड़

किसी दूर देश में था पवन

जिसे कहते हैं मलयानिल।

आयी याद बिछुड़न से मिलन की वह मधुर बात,

आयी याद चाँदनी की धुली हुई आधी रात,

आयी याद कान्ता की कमनीय गात,

फिर क्या? पवनउपवन-सर-सरित गहन-गिरि-कानन

कुंज-लता-पुंजों को पार कर

पहुँचा जहाँ उसने की केलि

कली-खिली-साथ सोती थी,

आयी याद बिछुड़न से मिलन की वह मधुर बात,

आयी याद चाँदनी की धुली हुई आधी रात,

आयी याद कान्ता की कमनीय गात,फिर क्या? पवन

उपवन-सर-सरित गहन-गिरि-कानन

कुंज-लता-पुंजों को पार कर

पहुँचा जहाँ उसने की केलि

कली-खिली-साथ।सोती थी, कि झोंकों की झड़ियों से

सुन्दर सुकुमार देह सारी झकझोर डाली,

मसल दिये गोरे कपोल गोल;

चौंक पड़ी युवती—

चकित चितवन निज चारों ओर फेर,

हेर प्यारे को सेज-पास,

नम्र मुख हँसी—खिली,

खेल रंग, प्यारे संग।

जुही की कली कविता-

अब यहाँ से देखिए कि सोती हुई जुही से पवन की झकझोर डालने वाली मुलाकात का क्या मतलब है। कविता यहाँ से शुरू होती है कि कोमलांगी तरुणी जुही निविड़ वन के एकांत में वल्लरी के पत्रों की गोद में आँख मूँदकर सोयी हुई है। वल्लरी माने वह जो लपेट कर बढ़ता है। वसन्त की रात थी। उसका प्रिय मलय पवन, अपनी प्रिया से दूर, किसी दूर देश में था कि उसे प्रिय मिलन की मधुर बात और चाँदनी की धुली हुई आधी रात और प्रियतमा की देह का कमनीय कम्पन याद हो आया। फिर क्या था, डूबे हुए सुन्दर नेत्रों को बन्द किये रही। मानो यौवन के मद में डूबी हुई है। संग।इस कविता में एक कथा है। उस कथा में एक खेल है, खेल में एक रंग है, रंग में एक गंध है, गंध में एक रस है, रस में भी आदिरस है। कहना पड़ेगा की निराला की बिम्ब योजना पर बात रखने से पहले हम यह कहना चाहते हैं कि निराला की कविता में स्त्री और प्रकृति जिस तौर पर एक एक होकर अभिव्यक्ति पाते हैं,

समझने की ख़ास बात यह है कि यहाँ कविता हो रही है, यहाँ संभोग नहीं हो रहा। साथ

निराला की दूसरी बहुत सी कविताओं में भी ऐसा है। बहुत जगह तो संभोग के क्षणों को विस्तार से चित्रित किया गया है। हिंदी के लोग चूँकि हर जगह कहानी तलाश करने के भूखे होते हैं इसलिए फौरन स्टोरी तलाश करने लग जाते हैं। उन्हें जैसे बात, विषय से मतलब ही नहीं रहता। संसर्ग का चित्र देखते ही जो लोग मनई चीन्हने के चक्कर तक चले जाते हैं, वे भ्रष्ट चेतना के लोग हैं।